ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-12* January- 2018
Innovation The Research Concept

परमाणु सिद्धान्त,वचनबद्धताएं एवं भविष्य

सारांश

सभी देशों के साथ भारत ने प्रारम्भ से ही मित्रता पूर्वक संबंध बनाये रखे है। बदलते समय और परिस्थितियो के साथ साथ अपनी सुरक्षा दृष्टि से परमाणु परीक्षण करना तथा अपनी पहचान को साबित करना आवश्यक प्रतीत हुआ अतः 1974 मे ही गैर परमाणु देशो मे शांतिपूर्ण उद्देश्यों हेतु परीक्षण करने वाला भारत प्रथम देश बन गया तथा अमेरिका से संधि करके भारत ने स्वयं को परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की पंक्ति मे ला खड़ा किया।

मुख्य शब्द : BARC - Bhabha Atomic Research Center
CTBT - Comprehensive (Nuclear) Test Ban Treaty
NPT - Nuclear non - proliferation treaty
NPT - Treaty on the non - proliferation of Nuclear weapons
NSC - National Security Council
PTBT - Partial Nuclear Test Ban Treaty
US - United States
UN - United Nation

अपर्णा शर्मा
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय कन्या महाविद्यालय,
बारां,राजस्थान

प्रस्तावना

भारत में प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के बाद विदेश नीति सुरक्षा नीति और परमाणुनीति में सकारात्मक परिवर्तन आया। परिणामस्वरूप शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु परीक्षण आवश्यक मानते हुए 1974 में पोकरण में प्रथम परमाणु परीक्षण किया गया और उसके 24 वर्षों के बाद पोकरण द्वितीय परीक्षण किया गया। इसको लेकर कुछ विवाद अवश्य पैदा हुए जैसे परमाणु परीक्षण क्यों किया गया, किन कारणो से अनिवार्य था परन्तु अन्ततः यही स्वीकार किया गया कि अनेक कारणों से यह उचित ही रहा।[1]

1. भारत के क्षेत्रीय सन्दर्भ मे आए सुरक्षा संम्बन्धित बदलाव को इसका प्रमुख कारण माना जा सकता है। इस दृष्टि से मूलतः पाकिस्तान, चीन तथा पाक-चीन संयुक्त आधारो मे हुए परिवर्तनों को मुख्य महत्व माना जा सकता है।[2]
2. रक्षा मे आत्मनिर्भरता बनाए रखने के लिए।
3. अपने पड़ोसियों एवं महाशक्तियों के द्वारा तैनात हथियारों के संदर्भ मे उचित संतुलन बनाने हेतु।
4. अर्न्तराष्ट्रीय स्थिति मे गैर परमाणु राष्ट्रों के सन्दर्भ में दण्डात्मक अथवा अवरोधक कार्यवाहियों से बचने के लिए।
5. परमाणु अप्रसार शस्त्र नियंत्रण, निशस्त्रीकरण आदि विषयों के सन्दर्भ में परमाणु राष्ट्रों के विचारों, सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं में परिवर्तन लाने के लिए।
6. वास्तविक सैन्य उपयोग के बजाय राजनीतिक एवं राजनयिक अर्थों मे इसके प्रयोग के लिए सार्थक एवं कारगर बनाने के लिए।

इस क्रम में यह स्पष्ट है कि भारत का परमाणु कार्यक्रम बदलते हुए अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश में परिवर्तन एवं अपनी सुरक्षा के खतरों के दरमियान के संदर्भ मे अपने आप को राजनीतिक एवं राजनयिक रूप से सक्षम बनाने के साथ साथ अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति मे अपनी योग्यता अनुसार भूमिका प्राप्त करने हेतु प्रयास प्रतीत होता है।

चूंकि यह शोध लेख भारतीय परमाणु सिद्धान्त की विशेषताओं, वचनबद्धताओं और भविष्य से सरोकार रखता है।[3]

इस क्रम में भारतीय परमाणु सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएं, वचनबद्धताएं और भविष्य को निम्नानुसार उल्लेखित किया जा सकता हैं

परमाणु सिद्धान्त

परमाणु परीक्षणों के उपरान्त प्रेस व अन्य मंचो पर संबोधनों तथा अन्ततः संसद में सरकार द्वारा रखे गये पत्रों के आधार पर भारत के नये परमाणु

सिद्धान्त का स्पष्ट विवरण प्राप्त होता है।[4] इस सिद्धान्त की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार से हैं–

1. अब भारत तकनीक प्रदर्शन से निश्चित बदला लेने की क्षमता रखता है।
2. भारत इस क्षमता का प्रयोग परम्परागत हथियारों वाले राष्ट्र के विरूद्ध नहीं करेगा।
3. इस तकनीक के संयमित उपयोग हेतु एक व्यापक कमांड व नियंत्रण पद्धति का विकास किया जायेगा।
4. सीमाओं पर परमाणु हथियारो की तैनाती नहीं की जाएगी ताकि अचानक युद्ध की संभावना ना हो सके।
5. परमाणु हथियारो के संदर्भ मे पहले प्रयोग ना करने का सिद्धान्त अपनाया जायेगा।
6. पहले प्रयोग ना करने के सिद्धान्त को परमाणु शस्त्रों के प्रसार व उनके अवैध प्रयोग को रोकने हेतु पहले कदम के रूप मे उपयोग होगा।
7. परमाणु हथियारो का उपयोग दूसरो द्वारा अपने विरूद्ध प्रयोग रोकने एवं भारत की रक्षा को उत्पन्न हुए खतरों से निपटने हेतु ही होगा।
8. भारत प्रथम पहल न करने के सिद्धान्त को अपने पड़ोसियों द्वारा भी मान्यता दिलाने के लिए प्रयत्न करेगा।[5]

वचनबद्धताएं

1. भारत ने परमाणु शस्त्रो का पहले प्रयोग ना करने की वचनबद्धता की है।
2. भारत इसके बाद सी.टी.बी.टी. के संशोधित स्वरूप पर हस्ताक्षर करने को तैयार है।
3. भारत ने विश्व निशस्त्रीकरण के प्रति अपनी निष्ठा फिर से अभिव्यक्त की है।
4. भारत ने सुस्पष्ट कमाण्ड एवं नियंत्रण पद्धति के विकास करने की बात की है।
5. भारत ने स्वैच्छिक परमाणु परीक्षण ना करने की वचनबद्धता दोहराई है।[6]

भविष्य

भारत के परमाणु शस्त्र समपन्न स्थितियों के परिणामो के मूल्यांकन के आधार पर इसके भविष्य के बारे मे कुछ टिप्पणियां निम्न है

1. भारत द्वारा किये गये परमाणु परीक्षणो के बाद सरकार व उसके प्रतिनिधियों द्वारा की गई टिप्पणियो का आंकलन करने से पता चलाता है कि भारत सरकार ने तीन विरोधाभास पूर्ण- युद्ध लड़ने, निरोधक एवं पूर्ण समाप्ति - परमाणु सिद्धान्तों की चर्चा की है। इससे पड़ोसी देशो में भारत के प्रति विश्वास के स्थान पर अविश्वास की नीतियों को बढ़ावा मिला है।[7]
2. भारतीय नीति निर्धारक समय समय पर परमाणु कार्यवाही को उचित ठहराते हुए इसे "न्यूनतम सक्षम परमाणु निरोधक" के रूप मे प्रयोग करने की बात कहते है। इसका सही आंकलन करने से इस सिद्धान्त के कार्यान्वयन मे दो महत्वपूर्ण कठिनाईया स्पष्ट होती है 2.1 निरोधक का सिद्धान्त अपने आप मे अस्पष्ट एवं सुनिश्चित नही होता है। 2.2 इसके सही उपयोग हेतु दुश्मनों की तैयारी एवं क्षमता का स्पष्ट आंकलन आवश्यक है।[8]
3. भारत द्वारा न्यूनतम परमाणु निरोधक के रूप में इस उपयोग का अर्थ इस निरोधक के समाप्ति की स्थिति मे अपने शत्रुओ के खतरो से निपटने हेतु शक्ति प्रदर्शन करने की क्षमता भी रखता है। यदि यह बात सही होती है तो उस स्थिति मे उसे अपने लिए अनिवार्यतः बदले की कार्यवाही की अपेक्षा के लिए तैयार रहना पड़ेगा।[9]

इस संदर्भ मे भारत के लिए उपयुक्त परमाणु नीति के संदर्भ में सी. राजामोहन द्वारा सुझाये गये 10 निर्देशों का पालन करना सही होगा।

1. परमाणु शस्त्र सम्पन्न राष्ट्र के नेता को अब नरम रवैया अपनाना होगा।
2. परमाणु शस्त्र पर प्रतिबन्धों का ढाचा तैयार करना होगा।
3. निशस्त्रीकरण से शस्त्र नियंत्रण की ओर जाना होगा।
4. परमाणु शक्ति सम्पन्न पड़ोसी राष्ट्रों को युद्ध न करने हेतु तैयार करना होगा।
5. अपने छोटे पड़ोसी राष्ट्रों का विश्वास जीतना होगा।
6. चीन को अपना शत्रु बनाने से बचना होगा।
7. बेवजह डर की भावना को त्यागना होगा।
8. परमाणु शस्त्रों द्वारा राजनैतिक खेल बंद करना होगा।
9. परमाणु शस्त्रों संबंधित विरोधी विचारो की स्वतंत्रता प्रदान करनी होगी।
10. परमाणु क्रान्ति से परे भी देखना होगा।

इस प्रकार नये संदर्भ में भारत को अपनी परमाणु नीति मे परिवर्तन के साथ साथ अपनी मूलभूत मान्यताओ को बनाये रखते हुए विश्वशांति हेतु प्रयास करने चाहिए। यही अन्ततः इसके परमाणु शस्त्र सम्पन्न राष्ट्र होने का विश्व एवं मुख्य रूप से तीसरी दुनिया के राष्ट्रो को लाभ होगा। इसी स्थिति मे भारत भी अपने विदेश नीति सम्बन्धित उद्देश्यों की पूर्ति करने में सक्षम हो सकेगा।

उद्देश्य

भारत हमेशा से शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के नियम का पालन करने वाला देश रहा है। अपनी विदेश नीति मे नैतिक मूल्यों को उच्च रखना तथा पड़ोसी देशो का साथ निभाना, मित्रता पूर्वक व्यवहार करना इसकी विशेषता रही है। भारत की परमाणु नीति का उद्देश्य रक्षा मे आत्मनिर्भरता तथा अपने पड़ोसियों व महाशिक्तयों द्वारा तैनात हथियारों के प्रति उत्तर में उचित संतुलन बनाना तथा स्वयं को परमाणु प्रवेश द्वार पर खड़े राष्ट्र से बढ़ा कर परमाणु हथियार सम्पन्न राष्ट्र के रूप मे दिखाना और अपने स्थिति को मजबूत करना हमारी परमाणु नीति का मुख्य उद्देश्य रहा है।

निष्कर्ष

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति पंडित नेहरू से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक सभी राष्ट्रो से मैत्री रखने वाली रही है। समय समय पर भारत पर होने वाले आंतकवादी हमलो से सीख लेकर हमने परमाणु परीक्षण किये तथा अमेरिका के

साथ परमाणु संधि करके इस क्षेत्र मे आत्मनिर्भरता प्राप्त की लेकिन भारत हमेशा की तरह प्रथम पहल न करने और इसी वचनबद्धता को पड़ोसियों द्वारा भी मान्यता दिलाने हेतु प्रयत्नशील है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *दीक्षित जे.एन अक्रोश वार्ड रज fifty year of Indian foreign policy 1998 page no 54, 431*
2. *kamath p.m. indian nuclear strategy : a prospective for 2020 strategy analysis volume 22 number 12 March 1919 page no 1936-37*
3. *संसद में 27 मई 1998 को सरकार द्वारा "evolution of India's nuclear policy" नामक दस्तावेज मे इसका स्पष्ट वर्णन उपलब्ध है तथा The Times of India 05th August 1998 में भी देखा जा सकता है।*
4. *संसद में 27 मई 1998 को सरकार द्वारा "evolution of India's nuclear policy" नामक दस्तावेज मे इसका स्पष्ट वर्णन उपलब्ध है तथा The Times of India 05th August 1998 में भी देखा जा सकता है।*
5. *के. सुब्रहम्णयम् 'no first use of declaration: it's meaning and significance', Times of India 05th August 1998*
6. *इस प्रारूप के हेतु देखिए www.meadev.gov.in /govt/indianucld.htm*
7. *Manoj Joshi 'J technology demonstration to assured retaliation' strategy analysis volume 22 - 10th January 1999*
8. *वही पृष्ठ संख्या 1476 – 77*
9. *वही पृष्ठ संख्या 1477*